International Research Journal of Humanities, Language and Literature ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 5.401 Volume 5, Issue 12, December 2018
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

राधे श्याम तिवारी
शोद्यार्थी
हिमालयन विश्वविद्यालय,
ईटानगर, अरूणाचल प्रदेश

डॉ॰ प्रशान्त
सहायक प्रोफेसर
हिमालयन विश्वविद्यालय,
ईटानगर, अरूणाचल प्रदेश

सारांश

शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा ही मानव की अभिव्यक्ति, समायोजन की क्षमता एवं व्यक्तिगत निर्माण में सहायक होती है। वर्तमान में शिक्षकों के रूप में नियुक्ति पाने वाले उच्च योग्यता धारी व्यक्तियों का अवसर मिलते ही नौकरी को छोड़ जाने की प्रवृत्ति दृष्टिगत हो रही है। इसकी पृष्ठभूमि में मुख्य रूप से दो कारण हो सकते हैं–व्यवसाय से असंतुष्टि तथा सामाजिक प्रतिष्ठा। उच्च योग्यताधारी शिक्षक फलतः अपने व्यवसाय से असन्तुष्ट हो अथवा निम्न वेतन पाने के कारण असन्तोष की भावना जागृत हो गयी हो। य शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि से अभिप्राय शिक्षण व्यवसाय के प्रति शिक्षकों के कार्य सन्तोष के स्तर से है, वे इस व्यवसाय के प्रति कितने समर्पित हैं तथा यह व्यवसाय उनकी बुनियादी आवश्यकताओं की कहां तक पूर्ति कर रहा है। ''कार्य संतोष कर्मचारी की वह प्रवृत्ति है जो अनेक कारकों के साथ उसकी कार्य क्षमता को भी प्रभावित करती है, कार्य सन्तुष्टि ही एक ऐसी साधारण अनुभूति की अवस्था है जो कि व्यक्ति को अनुकूल उद्देश्य प्राप्ति के लिए पर्याप्त रूप से प्रेरित करती है, ओर स्वयं प्रेरित व्यक्ति अपने कार्य को इतनी अधिक संलग्नता के साथ करता है इसका अनुमान दूसरा कोई व्यक्ति नहीं लगा सकता।'' प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित परिकल्पनायें प्रस्तुत के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये है–शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।

Key Word – 1. शासकीय महाविद्यालय, 2. अशासकीय महाविद्यालय, 3. कार्य सन्तुष्टि

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

शिक्षा ही सशक्त साधन के रूप में जीवन में आने वाली चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। शिक्षा हमारे राष्ट्र के विकास के लिए मुख्य आधार मानी जाती है, क्योंकि राष्ट्र की प्रगति राष्ट के शिक्षित लोगों पर निर्भर करती है। यदि लोग शिक्षित होंगे तो राष्ट्र का निश्चित रूप से विकास होगा। शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा ही मानव की अभिव्यक्ति, समायोजन की क्षमता एवं व्यक्तिगत निर्माण में सहायक होती है। अन्तर्राष्ट्रीय विकास आयोग की रिपोर्ट में कहा गया है कि प्राथमिक शिक्षा मनुष्य का मौलिक एवं संवैधानिक अधिकार है। लेकिन उच्च शिक्षा राष्ट्र के विकास व प्रगति का आधार मानी गयी है। हमारी केन्द्रीय व राज्य सरकार सबसे अधिक प्राथमिकता प्राथमिक शिक्षा पर दे रही है। केन्द्र सरकार ने शिक्षा को समवर्ती सूची में शामिल करके शिक्षा का पूर्ण उत्तरदायित्व राज्य सरकारों को दे दिया है। लेकिन राज्य सरकारें वित्तीय संसाधनों की कमी व संकट के कारण उच्च शिक्षा को पर्याप्त वित्तीय सहायता प्रदान करने में असमर्थ है। यह जीवन पर्यन्त गतिमान विकास की वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करती है। यह मात्र पढ़ना तथा पढ़ाना ही नहीं सिखाती है अपितु व्यक्तित्व का समग्र रूप में स्वाभाविक, सामजस्यपूर्ण व प्रगतिशील विकास कर व्यक्ति को राष्ट्र व समाज के लिए उपयोगी बनाती है। समय तो अपनी गति से चलता है, दिन बदलते है, साल गुजरते हैं और सदियां इतिहास के पन्नों में सिमट कर रह जाती हैं। बींसवी सदी भी अब इतिहास बन चुकी है और इक्कीसवी सदी शुरु हो गयी है ऐसे अवसर पर थोड़ा गम्भीरता से आत्मावलोकरन करना और विकास की गति व उसके विभिन्न आयामों पर एक समालोचक दृष्टि डालना आवश्यक लगता हैं अपने दैनिक और राष्ट्रीय जीवन में बहुत से ऐसे पहलू और क्षेत्र हैं जिनसे हमने प्रगति की है, कुछ ऐसे भी क्षेत्र हैं जिनमें हमारा प्रदर्शन सामान्य रहा और कुछ क्षेत्रों में हमने निराशाजनक प्रदर्शन किया है। यह दुर्भाग्य ही है कि ऊपरी हिस्से में सुधार की कोशिश तो रही है, लेकिन असल समस्या को सुधारने की पहल कहीं से नहीं हो रही। यह बात दीगर है कि एक समय था, जब सरकारी शिक्षण संस्थाओं से निकले विद्यार्थी ही देश के शीर्ष पदों पर पहुंचते थे। कर्तव्यनिष्ठ शिक्षकों ने सीमित संसाधनों में उनकी प्रतिभ का विकास किया था। लेकिन आज की परिस्थितियों में यह बेहद दुष्कर है और ऐसे में मध्यम और निम्न वर्ग के लोगों के लिए शिक्षा का नया क्षितिज उसकी पहुंच से दूर होना स्वाभाविक है। सरकार को शिक्षा में समानता की जिम्मेदारी निभानी चाहिए थी, लेकिन हो इसके विपरीत रहा है। कहीं आरक्षण का खेल तो कहीं शिक्षा का व्यापारीकरण को प्रोत्साहन, आखिर सरकार शिक्षा को किस दिशा में ले जाना चाहती है? यदि नहीं, तो फिर शिक्षा में समरूपता के लिए कड़े कानून क्यों नहीं बनते? यह बात सही है कि बढ़ती छात्र संख्या के अनुपात में सरकार संसाधनों के विकास में विफल रही । ऐसे में निजी शिक्षण–संस्थाओं को फलने –फूलने का अवसर मिला। इसके शिक्षा की जरूरतें तो पूरी हुई हैं। साथ ही विद्यार्थियों को भी संभावनाओं के नये अवसर मिले। लेकिन चिंताजनक यह है कि इस क्षेत्र में ज्यादातर शैक्षिक संस्थायें व्यापारिक मानसिकता से आयीं। उन्होंने यहां भी लाभ–लागत का व्यापारिक दृष्टिकोण अपनाया। आज के मनोवैज्ञानिक युग में अध्यापक की अभियोग्यता तथा आत्म संप्रत्यय को जानना आवश्यक है। क्योंकि शिक्षक की शिक्षण अभियोग्यता तथा आत्म–संम्प्रत्य का स्पष्ट प्रभाव बालक एवं उसकी सम्प्राप्तियों पर पड़ता है

तथा साथ–साथ समाज भी शिक्षक से आज यह अपेक्षा करता है कि उसका चरित्र आदर्श हो, वह उच्च शिक्षण अभियोग्यता रखता हो, वह सन्तोषी हो तथा उसके चरित्र में ऋषियों की सादगी हो, वह ज्ञान व सत्य का उसी प्रकार संधान करे जैसे प्राचीन ऋषि करते थे। अध्यापको की शिक्षण अभियोग्यता व आत्म संप्रत्यय के अध्ययन के साथ कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया जाये और जिन शिक्षकों का इस व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है। उनको ही इस कार्य हेतू नामांकित किया जाये तथा जो अध्यापक पथ भ्रमित है उन्हें उपचारात्मक प्रशिक्षण दिया जाये जिससे वह अपना शत–प्रतिशत योगदान शिक्षा के विकास में दे सके।

आवश्यकता एवं महत्व

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्य करने वाले शिक्षकों का सामाजिक व अर्थिक स्तर की भी इनकी कार्य प्रणाली से प्रभावित होता है। शासकीय महाविद्यालयों में कार्य करने वाले शिक्षकों का सामजिक व आर्थिक स्तर अच्छा होता है वह पाश कालौनियों में रहना पसन्द करते हैं इनके पास सुख सुविधाओं के सारे भौतिक साधन उपलब्ध होते हैं। जबकि अशासकीय महाविद्यालयों के कार्य करने वाले शिक्षकों को अच्छा वेतन न मिल पाने के कारण इनका सामाजिक व आर्थिक स्तर ऊँचा नहीं होता है यह शिक्षक कम साधनों में ही सन्तोष कर लेते हैं। इसके आधार पर कह सकते हैं कि शासकीय महाविद्यालयों में कार्य करने काले शिक्षकों तथा अशासकीय महाविद्यालयों में कार्य करने वाले शिक्षकों के सामाजिक, आर्थिक स्तर में अन्तर देखने का मिलता है। अशासकीय और शासकीय महाविद्यालयों में कार्य करने वाले शिक्षकों की पारिवारिक स्थिति में अन्तर होता। शासकीय महाविद्यालयों में कार्य करने वाले अच्छा वेतन पाते हैं जिसका प्रभाव उनके परिवार पर पड़ता है। किसी भी परिवार के लिए अर्थ का होना अतिआवश्क है। अर्थहीन परिवार का संतुलन बिगड़ जाता है और परिवार टूटने लगते हैं। जबकि जिन परिवारों में अच्छा वेतन आता है उन परिवारों में रिश्ते भी मजबूत होते हैं। अर्थात् कह सकते हैं कि अशासकीय महाविद्यालयों में कार्य करने वाले शिक्षकों का पारिवारिक सम्बन्ध और वित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्य करने वाले शिक्षकों के पारिवारिक सम्बन्ध में अन्तर पाया जाता है।

इन सब तथ्यों को जानने के लिए इस विषय पर अध्ययन की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त अध्ययन में यह भी देखा जायेगा कि शासकीय और अशासकीय महाविद्यालयों में कार्य करने वाले शिक्षकों को कार्य सन्तुष्टि, सामाजिक आर्थिक स्तर, चिन्ता और पारिवारिक वातावरण इनके शिक्षण तथा व्यवहार को कितना प्रभावित करता है।

सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन

निम्नलिखित विद्यार्थियों ने प्रस्तुत विषयों को शोध का विषय बनाया है जिसमें मेहरा, विमला एवं सक्सेना अलका (2012), सिंह, राजेश कुमार (2014), सिंह, कुमुदिनी (2016), चौधरी, एस0 (2017), अशहर तौसीफ (2015), सैफी, एम0 (2018) और रजा नेहा व दूबे चन्द्र (2021) आदि प्रमुख है।

समस्या कथन

''शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन''

शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

कार्य सन्तुश्टिः- कार्य सन्तुष्टि व्यक्ति की अपनी मनोवैज्ञानिक, पर्यावरणीय, सामाजिक तथा भौतिक परिस्थितियों के प्रति सकरात्मक अनुभव है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
2. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
3. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
4. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें

1. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
2. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
3. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
4. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए शासकीय एवं आशासकीय शिक्षकों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श :–

वर्तमान लघु शोध हेतु 80 शिक्षकों (40 पुरूष शिक्षक एवं 40 महिला शिक्षक) को शामिल किया गया है।

उपकरण :–

शोध उपकरण–''डॉ. मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि के मापने हेतु मापनी (DJSS)''

तालिका – 4.1

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

पुरूष शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
शासकीय महाविद्यालय	25	158.25	13.55	3.56
अशासकीय महाविद्यालय	25	161.36	16.86	

उपयुक्त सारणी 4.1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि शासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 158.25 एवं 13.55 प्राप्त हुआ एवं आशासकीय महाविद्यालयों पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 161.36 एवं 16.86 प्राप्त हुआ जबकि क्रान्तिक अनुपात का मान 3.56 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 198 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर के सारणीमान 1.97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के सारणी मान 2.60 से अधिक है। अर्थात् क्रान्तिक–अनुपात से स्पष्ट होता है कि शासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि अशासकीय महाविद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः परिकल्पना प्रथम स्वीकार की जाती है।

तालिका – 4.2

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

महिला शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
बी.टी.सी. शिक्षक	25	162.42	15.86	4.10
विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षक	25	171.35	18.38	

उपयुक्त सारणी 4.2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि शासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 162.42 एवं 15.86 प्राप्त हुआ एवं आशासकीय महाविद्यालयों महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 171.35 एवं 18.38 प्राप्त हुआ जबकि क्रान्तिक अनुपात का मान 4. 10 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 198 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर के सारणीमान 1.97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के सारणी मान 2.60 से अधिक है। अर्थात् क्रान्तिक–अनुपात से स्पष्ट होता है कि शासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि अशासकीय महाविद्यालयों के महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः परिकल्पना द्वितीय स्वीकार की जाती है।

तालिका – 4.3

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

ग्रामीण शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
बी.टी.सी. शिक्षक	25	170.23	18.64	4.86
विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षक	25	185.38	21.86	

उपयुक्त सारणी 4.3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि शासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 170.23 एवं 18.64 प्राप्त हुआ एवं आशासकीय महाविद्यालयों शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 185.38 एवं 21.86 प्राप्त हुआ जबकि क्रान्तिक अनुपात का मान 4.86 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 198 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर के सारणीमान 1.97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के सारणी मान 2.60 से अधिक है। अर्थात् क्रान्तिक–अनुपात से स्पष्ट होता है कि शासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि अशासकीय महाविद्यालयों के शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः परिकल्पना तृतीय स्वीकार की जाती है।

तालिका – 4.4

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

शहरी शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
बी.टी.सी. शिक्षक	25	163.46	12.72	3.56
विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षक	25	168.88	14.82	

उपयुक्त सारणी 4.4 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि शासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 163.46 एवं 12.72 प्राप्त हुआ एवं आशासकीय महाविद्यालयों ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 168.88 एवं 14.82 प्राप्त हुआ जबकि क्रान्तिक अनुपात का मान 3. 56 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 198 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर के सारणीमान 1.97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के सारणी मान 2.60 से अधिक है। अर्थात् क्रान्तिक–अनुपात से स्पष्ट होता है कि शासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि अशासकीय महाविद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः परिकल्पना चतुर्थ स्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष

1. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।
4. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अली एस0एम0 एस0 (2004): मदरसे व सरस्वती शिशु मन्दिरों के अध्यापकों के मूल्यों व कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन एम0एड0 लघुशोध प्रबन्ध एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली।
- सिंह आर0पी0 (2001) : सरकारी प्राथमिक विद्यालय तथा सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के मूल्य व कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, एम0एड0 लघु शोध प्रबन्ध एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली।
- खण्डेवाल अनीता (1998) :बरेली जनपद के प्राथमिक जुनियर हाईस्कूल एवं माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का एक अध्ययन एम0एड0 लघु शोध एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली।
- द्विवेदी एस0के0 (2004) : बरेली शहर में प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का एक अध्ययन एम0एड0 लघु शोध प्रबन्ध एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली।
- राठौर ए0के0 (2007) : रामपुर जनपद के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का एक अध्ययन एम0एड0 लघु शोध प्रबन्ध चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ।